वंचितों ,घुमन्तु आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन

प्रा . अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
[अध्यक्ष हिंदी विभाग]
डॉ . श्री . नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज गोवे - कोलाड ,
मोबाईल न - ९४२१४५१७०३ /९७६६७३१४७०
ईमेल - sureshamalpure@gamil com

सारांश :-

वंचितों ,घुमन्त ,आदिवासी जनजातियाँ यह एक महत्वपूर्ण जातियाँ प्राचीन कल से भारतवर्ष में दिखाई देती है। इनके प्रश्न अलग -अलग है ,संस्कृति ,खान -पैन ,रीती रिवाज भी साबास अलग दिखाई देती है। इनको मूल निवासी भी कहा जाता है। इन साई जनजातियों को अनुसूचित जनजाति के रूप में संविधान की पांचवी सूचि इ मान्यता प्रदान की है। आज इन जनजातियों के बारे में साहित्य बहुत लिखा गया है ,और ऐ भी लिखा जायेगा। उनकी समस्या को केंद्र बनाकर यह लेखन कार्य चल रहा रहा है। इन के विमर्श में हम उनके द्वारा खुद के हित के लिए उठाई गई आवाज,उनका विरोध ,उनकी योजना,चेतना,अस्मिता ,स्वाभिमान,अस्तित्व अदि पक्षों को लेते हैं।

कुंजी शब्द :- वंचित, घुमन्तु, आदिवासी, जनजातियाँ, संविधान, मूल निवासी , अस्मिता ,अस्तित्व, शोषण ,दस्तावेज आदि।

शोध पद्धति :- विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धति।

शोध के उद्देश्य :-

१] वंचितों ,घुमन्तु, आदिवासी जनजाति के प्रश्नों को समझना।

२] वंचितों ,घुमन्तु, आदिवासी जनजाति के समस्याओं पर प्रकाश डालना।

३] वंचितों ,घुमन्तु, आदिवासी जनजाति को लक्ष्य बनाकर साहित्य लिखना।

४] वंचितों ,घुमन्तु, आदिवासी जनजाति का साहित्य बढ़ाना और विकास करना।

प्रस्तावना :-

आज का २१ वी सदी का साहित्य वंचितों ,घुमन्तु , आदिवासी जनजाति पर केंद्रित रहा है। आज की सदी में जहाँ इंसान चाँद पर कदम रख चूका है ,मंगल गृह पर बसने की कोशिश कर रहा है ,मगर अफसोस की बात है कि वंचितों ,घुमन्तु , आदिवासी जनजाति अब भी आदिम व्यवस्था को जीते हुए अपनी पहचान के लिए लड़ रही है। आदिवासी शब्द का अर्थ मूल निवासी कहा जाता है। घुमन्तु भी अब धीरे -धीरे नष्ट होते जा रहे है। उनकी कला ,संस्कृति एवं त्यौहार भी आज प्रकट रूप से सामने नहीं आ रहे है। घुमन्तु के विमर्श में हम उनके द्वारा खुद के हिट के लिए थाई गयी आवाज उनका विरोध ,उनकी चेतना ,अस्मिता ,स्वाभिमान ,एटीएम निर्णय क्षमता अदि पक्षों पर विचार करना जरुरी है। हिंदी के तमाम साहित्यकारों ने इस विषय को लेकर उपन्यास ,कहानी एवं का भीअधिक मात्रा में लिखे है,वंचितों ,घुमन्तु , आदिवासी जनजातिके बारे में **अनिल चमड़िया** लिखते है - " बिहार के छोटा नागपुर ,संथाल ,परगना ,पलामू आदि क्षेट्रेन में जंगलों के कटाने से आदिवासी पलायन करने को मजबूर हुआ है ,जिससे आदिवासियों की संख्या निरंतर काम हो रही है। सन १९६१ में राज्य की कुल जनसँख्या ९.४१ थी। जो सन १९८१ में ८. ३१ प्रायिशत रही है। आजादी के समय जहाँ कुछ क्षेत्रफल का २३ प्रतिशत जंगल थे। वह घटकर अब करीब १२ प्रतिशत हो गया है। " -१

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'अल्मा कबूतरी ' के सन्दर्भ में

अल्मा कबूतरी यह उपन्यास बुंदेलखंड की विलुप्त होती जनजाति का समाज -वैज्ञानिक अध्ययन ही नहीं है बल्कि कबूतरी इस घुमन्तु जनजाति का सम्पूर्ण तना -बना इस में मौजूद है। कभी -कभी सडकों ,गलियों में घूमते या अखबारों की अपराध सुर्ख़ियों में दिखाई देने वाले कंजर ,सौसी ,नट ,मदारी। सपेरे। पारधी ,हाशुदे। बंजारे। बावरिया ,और कबूतर ऐसे न जाने कितनी जनजातियां है जो सभ्य समाज के हाशियों पर डेरा लगाए सदियाँ गुजर देती है। हमारा उनसे चौकन्ना सम्बंद सिर्फ काम चलौ ही बना रहता है। उनके अपराधों से डरते हुए मगर इन्हे अपराधी बनाए रखने के आग्रही है।

कबूतरी यह समुदाय के पुरुष या तो जंगल में रहते है या तो जेल में ,स्त्रियाँ शराब की भट्टियों पर या तो सवर्णों के बिस्तरों पर। अंग्रेजों के गजेटियरों में अनेक नाम है अपराधी काबिल या सरकश जनजातीय। स्वतंत्र प्राप्ति के बाद कबूतरा जाती के लोग गाओं से बहार जंगलों में ,खेती में बसने लगे थे। उपन्यास में मंसाराम के खेत में कबूतरी लोगोने अपना डेरा डाला था। मगर खेत का मुखिया मंसाराम उसे निकलने का काम करता है। उनके साथ छुआछूत का व्यव्हार भी करता है। इसकी भयंकर यातनाओं से पिछड़ी जातियों को गुजरना पड़ता है। स्कुल का मास्टर राणा को नल को हाथ लगाने नहीं देता। उसे तालाब का गन्दा पानी पीना पड़ता है।

कबूतरी जाती घुमन्तु है ,जंगलों में घूमती है। जहाँ भी पेट भरता है वहां डेरा लगाकर रहते है। राणा की माँ उसको स्कुल के बजाय चोरी ,शराब बनाने को सिखाती है। अंत में राणा भी कबूतरा बन जाता है। इनको पुलिस पकड़कर भी ले जाती है तो भी दिलख़ुलास रहते है उनके लिए शर्म की कोई बात नहीं होती। नारियां कई बार किसी बड़े अफसर के सह, बड़े जमींदार के साथ या सेठ साहूकारों के साथ देह व्यापर भी कराती है। पुलिस उनको हमेशा पकड़ ने की कोशिश में रहते है। उपन्यास में बस्ती पर हमला कर गर्भवती जमुनी की जांघ में डंडा घुसता है। वह बिचारि मर जाती है ,उसका अंत्यसंस्कार करते है। भूरी ,कदमबाई और एल्मा इन तीनों स्त्रियों पर भी बहुत बार पुलिस ने अत्याचार किया है। इस प्रकार एल्मा के माध्यम से लेखिका ने कबूतरी जनजाति का तना - बना यथार्थ रूप से चित्रित किया है।

वीरेंद्र जैन के ' पार ' उपन्यास के सन्दर्भ में

पार इस उपन्यास का प्रकाशन १९९४ में हुआ। लेखक वीरेंद्र जैन ने प्रस्तुत उपन्यास में अपने रहदय को छूते मर्मस्पर्शी अमूर्त पीड़ा के मूर्त रूप को चित्रित किया है। इस में बुंदेलखंड के घुमन्तु जनजाति का यथार्थ जीवन को प्रस्तुत किया है। वर्तमान तकनिकी अनभज्ञता और धार्मिक अन्धविश्वास के कारन उपजी शोषित समाज की कहानी को इस उपन्यास में चित्रण किया है। चल ,प्रपंच और चालबाजी ने औरतो को बिकाऊ मॉल बना दिया है। उपन्यास में आधुनिक विकास के नाम पर बांध बनाकर बेतवा के किनारे बेस गांव ,समाज और जंगल की बलि मानवता को भूल कर सिमित लोगों के हिट से जुड़कर किआ गया है। वन उजड़ने के कारन आई विपत्ति का जनजातियों को आर्थिक कमी के कारन विशिष्ट छोटे -मोठे रोजगार पर ही जीवन निर्वाह करना पड़ता है। जैसे -गुडान गोदना , नक् छेड़ना , कण छेड़ना , महुए एकठा करना , तेंदुए के पत्ते जमा करना ,जलाऊ लकड़ी बीनना ,बांस की चीजे बनाना आदि यह समुदाय काम करता था। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में आदि वासी जनजाति के विभिन्न कार्य पर प्रकाश डालने की कोशिश वीरेंद्र जैन ने किया है।

संजीव का उपन्यास ' जंगल जहाँ शुरू होता है ' के सन्दर्भ में

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक संजिव जी ने 'थारू' इस घुमन्तु जनजाति का चित्रण किया है। थारू के साथ -साथ धांगड़ ,दुसाध जाती का भी उल्लेख इसमें अत है। लेखक निजी अनुभव कहते है जहाँ अपराध पहाड़ की तरह नंगा खड़ा है ,जंगल की तरह फैला हुआ है ,नदियों में दूर -दूर तक बह रहा है इतिहास के रंध्रों से हवा में घुल रहा है ,भूगोल की भूल -भुलैया में दोल रहा है। उपन्यास का मुख्या पात्र काली है जो शिक्षा की असुविधौं से काम शिक्षित होते हुए भी जागरूक विचारों का है। वह कभी भी अन्याय बर्दाश्त पता है। भाई बिससम और काली दोनों ने खेत गिरवी होने पर मिल बंद हो जाने पर बेरोजगारी के कारन ठेकेदार के घर मजदूरी करते है। मगर समय पर मजदूरी नहीं मिल पाने के कारन ग़ुस्सा करते है। ठेकेदार डाकू को पैसा देता है मगर

मजदूरों को समय पर पैसा नहीं देता। यह बात काली के दिमाग में बाथ जाती है। ईमानदारी और मेहनत का कोई मोल इस में नहीं है तह विचार मन में पैदा हो जाता है। उपन्यास में पुरुष की तरह स्त्रियों पर भी अनेका नेक अन्याय हो गए है। छोटी जाती के नाम पर उन्हें दुत्कारा भी जाता है।

भगवान दास मोरवाल के ' रेत ' उपन्यास के सन्दर्भ में

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने बंजारा जनजाति के कंजर समाज को केंद्र में रखकर लिखा है। कंजर का अर्थ होता है काननवरा अर्थात जंगलों में घूमने वाला समुदाय। इस जाती का पेशा ही चोरी करना या डाकू बनकर लोगों को फ़साना ,लुमार करना आदि था। इस जाती की स्त्रियां भी चोरी और वेश्यावृत्ति कराती है। इस उपन्यास की पूरी कहानी ही गजकी गांव के विशाल भवन कमला सदन के आस -पास ही केंद्रित है। जो इस समाज के भीतर पहलुओं से हमें अवगत कराती है। स्पस्ट है की भगवन दास मोरवाल जी ने कंजर स्त्री रुक्मिणी द्वारा स्त्री के अनेक समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

शिवकुमार यादव की ' काले ' कहानी के सन्दर्भ में

प्रस्तुत कहानी में फूल का प्रेम जनजातीय जीवन को आधार बनाकर लिखी कहानी बन गई है। इस में कोयलरी काम करने वाले घुमन्तु जाती के मजदूरों की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है। इस काले कहानी कामुख्य पात्र गोमती एवं विश्वास है जो मजदूरों के हक्क के लिए हमेशा के लिए संघर्ष करते रहते है। गोमती की माँ बचपन में ही बसी थी और पिता भी कोयलरी खदान में दबकर मर जाते है। इधर विश्वास के पिता कोयलारी में बाबू है और दिन -रत शिफ्टों में काम करते रहते है। गोमती और विश्वास इस मजदूरों के लिए संघर्ष करने के लिए आगे बढ़ाते है। दोनों शादी भी करना चाहते है और अपने जाती को सुधरने की इच्छा भी रखते है। ऐसे काम करने वाले मसीहा पर ही काले इल्जाम लगाकर उनको गांव से भागने का काम सर्कार की तरह हो जाता है। यही समस्या इस कहानी में दिखाई देती है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि आज के २१ वि सदी में घुमन्तु जनजाति का एक अलग विमर्श तैयार हुआ है। इस घुमन्तु जनजाति का वकास करना हमारा लक्ष्य है। साहित्य के माध्यम से साहित्यकारों ने उनके दुःख एवं दर्द को आपके सामने रखा है। उन समुदाय की अलग संस्कृति भी है उसे बचाना हमारा धर्म है। उनको आज शिक्षा देने की जरुरत भी है ,उनका विकास ही हमारा विकास माना जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१] अनिल चमड़िया -अरावली उद्घोष - अंक -९३ पृ २८१
२] मैत्रेयी पुष्पा - अल्मा कबूतरी [उपन्यास]
३] वीरेंद्र जैन - पार [उपन्यास]
४] संजीव -जंगल जहाँ शुरू होता है [उपन्यास]
५] भगवन दास मोरवाल -रेत [उपन्यास]
६] शिवकुमार यादव - काले [उपन्यास]